Roll No. .....

ED–2112

B. A. (Part I) EXAMINATION, 2021

SANSKRIT LITERATURE

Paper Second

(गद्य कथा एवं साहित्येतिहास)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 75

नोट : सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य है।

इकाई—1

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :15

(i) भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशनाम्।
अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणा
रजनिकर भस्तयो विशन्ति सुखेन उपदेशगुणाः।
गुरुवचनममलमपि सलिलमिव महदुपजनयति
श्रवणस्थितिं शूलमभव्यस्य। इतरस्य तु करिण
इव शङ्खाभरणमानन शोभा समुदयमधि कतरमुपजनयति।

(ii) गुरूपदेशश्च नाम पुरूषाणामखिलप्रक्षालनक्षमगजलं
स्नानम्, अनुपजातपलिता दि वैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्
अनारोपित मेदोदोषं गुरूकरणम्, असुवर्ण विरचन—
मग्राम्यं कर्णाभरणम्, अतीतज्योति रालोकः
नोद्वेगकरः प्रजागरः।

(iii) आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्।
इयं हि सुभगखड्ग मण्डलोत्पल वन विभ्रमभ्रमरी
लक्ष्मीः क्षीरसागरात्—पारिजातपल्लेवेभ्यो
रागम्, इनछुशकलादेकान्त वक्रताम्, उच्चैश्रवस
श्चंचलताम्, कालकूटान, मोहशक्तिम,
मदिराया मदम्, कौस्तुभमणेरति नैष्ठुर्यम्,
इत्येतानि सहवास परिचय वशाद्विरह विनोद
चिन्हानि गृहीत्वेवोद्गता।

इकाई—2

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो श्लोकों की व्याख्या कीजिए। 15

(i) मातृवत्परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत।
आत्मव् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः॥

(ii) न धर्मशास्त्रं पठनीति कारणं
न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मनः
स्वभाव एवाऽत्र तथाऽतिरिच्यते
यथा प्रकृत्या मधुरं गवां पयः॥

(iii) षड्दोषा पुरुषेणेह हातव्या भूतिभिच्छाता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता॥

(iv) आपदर्थे धनं रक्षेद्, दारान, रक्षेद धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्, दारैरपि धनैरपि॥

इकाई—3

3. मृग वायस-श्रृंगाल कथा तथा जरद्गव एवं दीर्घकर्ण कथा को अपने शब्दों में वर्णन कीजिए। 15

अथवा

आचार्य शुकनास के उपदेशों के सार का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

इकाई—4

4. वेद एवं वेदाङ्गों का सविस्तार वर्णन कीजिए। 15

अथवा

निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(i) अठारह पुराण

(ii) आरण्यक

(iii) उपनिषद्

(iv) ब्राह्मण ग्रन्थ

(v) ऋग्वेद

इकाई—5

5. "भारवेरर्थगौरवम्" पर एक निबन्ध लिखिए। 15

अथवा

निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(i) महाकवि कालिदास

(ii) श्री हर्ष

(iii) बाणभट्ट

(iv) महाकवि शूद्रक

(v) विशाखदत्त